यह प्रश्न-पत्र एवं उत्तर पुस्तिका संयुक्त है।

जय गुरु नाना | जय महावीर | जय गुरु राम

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा-2020

समय : 3 घण्टे
12:30 से 3:30 बजे तक

प्रश्न-उत्तर पत्र भाग - 12 आगम

अंक 100

नाम..... पिता/पति का नाम.....

शहर का नाम..... जन्मतिथि..... मोबाइल..... रोल नं .....

नोटः-सभी प्रश्नों के उत्तर दिये गये निर्देशों के अनुसार, निर्धारित स्थान पर, इसी प्रश्न पत्र में लिखें। उत्तर पुस्तिका जाँचने पर यदि यह पुष्टि होती है कि परीक्षार्थी ने दूसरे का सहयोग लिया है अथवा एकाधिक पुस्तिकाओं के उत्तर समान हैं तो उसे नकल किया हुआ मानकर परिणाम निरस्त कर दिया जावेगा। केन्द्र अधीक्षक उपरोक्त प्रश्नोत्तर पुस्तिका परीक्षा समाप्ति के अगले दिन श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) के पते पर भिजवावें।

1. आपने कितनी सामायिक की है 1,2,3 काँलम में लिखें। ( )

आगम विभाग

प्रश्न.1 निम्न गाथाओं के भावार्थ लिखिए। **(46)**

1. परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद् गुणाच्छादनोदभावने च नीचै गोत्रिस्या पद्विपर्ययो नीचैर्वृत्यनुंत्सेकौचत्तस्य।

.....

.....

.....

2. अम्मताय! मए मोगा भुत्ता विसफलोवमा। पच्छा कडुंभविवागा अणुबंध - दुहावद्दा।

.....

.....

3. खमावणयाए णं पल्हायणभावं जणयइ। पल्हायणभावभुवगए य सव्वपाण-भूय-जीवसत्तेसु मित्तीभावभुप्पाएइ। मित्तीभावमुवगए यावि जीवे भावविसोहिं काऊण निब्भए भवइ।

.....

.....

4. जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं रोगा य मरणाणि य। अहो दुक्खो हु संसारो जत्थ कीसन्ति जन्तवो।

.....

.....

5. दुःख शोक तापाक्रन्दन वध परिदेवनपत्यात्म परोभयस्थान्यस द्वेद्यस्य।

.....

.....

6. वन्दणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ, उच्चागोयं कम्मं निबंधइ। सोहग्गं च णं अप्पडिहयं आणफलं निव्वत्तेइ, दाहिणभावं च णं जणयइ।

.....

.....

7. निम्ममो निरहंकारो निस्संगो चत्तगारवो। समो य सव्वभूएसु तसेसु थावरेसु य।

.....

.....

8. खाइत्ता पाणियं पाउं वल्लरेहिं सरेहि वा। मिगचारियं चरित्ताणं गच्छई मिगचारियं।

.....

.....

9. वायणाए णं निज्जरं जणयइ। सुयस्स य अणुसज्जणाए अणासायणाए वट्टइ सुयस्स अणासायणाए वट्टमाणे तित्थधम्मं अवलम्बइ तित्थधम्मं अवलम्बमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ।

.....

.....

10. उवहि-पच्चक्खाणेणं अपलिमन्थं जणयइ। निरूवहिए णं जीवे निक्कंखे, उवहिमन्तरेण य न संकिलिस्सइ।

.....

.....

11. चक्षुरचक्षुरवधि केवलाणां निद्रा-निद्रानिद्रा-प्रचला-प्रचलाप्रचला स्त्यानगृद्धिवेदनीया नि च । सदसद्वेद्ये।

.....

.....

12. सुयाणि मे पंच महत्वयाणि नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु। निव्विण्णकामो मि महण्णवाओ अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो।

.....

.....

13. जयामिगस्स आयंको मजहारण्णम्भि जायई। अच्छन्तं रूक्खमूलम्मि को णं ताहे तिगिच्छई।

.....

.....

14. जयामिगस्स आयंको महारण्णम्मि जायई। अच्छन्तं रूक्खमूलम्मि को णं ताहे तिगिच्छई।

.....

.....

15. सोइन्दियनिग्ग हेणं मणुन्नामणुन्नेसु सद्देसु रागद्दोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बंधइं, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

.....

.....

16. लोभविजएणं संतोसीभावं जणयइ, लोभ वेयणिज्जं कम्म न बंधइ, पुव्वबद्धं च निञ्जरेइ।

.....

.....

17. तं बितं ऽम्मापियरो सामण्णं पुत्तं। दुच्चरं। गुणाणं तु सहस्साइं धारेयव्वाइं भिक्खुणो।

.....

.....

18. दंसणसंपन्नयाए णं भवमिच्छत्तहेयणं करेइ, परं न विज्झायइ पंर अविज्झायमाणे अणुत्तरेणं नाणदंसणेण अप्पाणंसंजोएमाओ सम्मं भावमाणे विहरइ।

.....

.....

19. एस खलु सम्मत्त परक्कमस्स अज्झयणस्स अट्ठे समणेणं भगवया महावीरेणं आघविए, पन्नविए, परूविए, दंसिए, उवदंसिए।

.....

.....

20. नवचतुर्दशपञ्चद्विभेदं यथाक्रमं प्राग्ध्यानात्।

आलोचन प्रतिक्रमण तदुभय विवेक व्युत्सर्गपश्छेदपरिहारोपस्थानानि।

.....

.....

21. आलोयणए णं माया-नियाण-मिच्छादंसणसल्लाणं मोक्खभाव विग्घाणं अणन्तसंसार वद्धणाणं उद्धरणं करेइ। उज्जुभावं च जणयइ। उज्जुभावपडिवन्ने णं जीवेइत्थी वेय-नपुंसकवेयं च न बंधइ। पुव्वबद्ध च णं निज्जरेइ।

.....

.....

22. योगदुष्प्रणिधाना दरस्मृत्यनुपस्थापनानि।

.....

.....

23. खाइत्ता पाणियं पाउं वल्लरेहिं सरेहि वा। मिगचारियं चरित्ताणं गच्छई मिगचारियं।

.....

.....

प्रश्न. 2 निम्न भावार्थ का मूल पाठ लिखिए। (20)

1. सुखसाता से विषयों के प्रति अनुत्सकता पैदा होती हैं। अनुत्सुकता से जीव अनुकंपा करने वाला, अनुद्भट एवं शोक रहित होकर चारित्र मोहनीय कर्म का क्षय करता है।

.....

.....

2. शरीर के प्रत्याख्यान से जीव सिद्धों के अतिशय गुणों का संपादन कर लेता हैं। सिद्धों के अतिशय गुणों से संपन्न जीव लोक के अग्रभाग में पहुँच कर परमसुखी हो जाता हैं।

.....

.....

3. उत्तमसंहनन वाले व्यक्ति का किसी एक विषय मे अन्त:करण की वृति का निरोध- टिकाये रखना-ध्यान हैं । वह अन्तर्मुहूर्त

.....

.....

4. परनिन्दा, आत्मप्रशंसा, सद्गुणों का आच्छादन - गोपन और असद्गुणों का प्रकाशन, नीच गोत्र के बंध हेतु हैं।

.....

.....

5. भावसत्य से जीवभाव विशुद्धि प्राप्त करता हैं। भावविशुद्धि में वर्तमान जीव अर्हत्प्रज्ञप्त धर्म की आराधना के लिए अद्यत होता हैं। अर्हत्प्रज्ञप्त धर्म की आराधना में उद्यत व्यक्ति परलोक धर्म का आराधक होता हैं।

.....

.....

6. तीव्रभाव, मन्दभाव, ज्ञातभाव, अज्ञातभाव, वीर्य और अधिकरण की विशेषता से उस आश्रव मे विशेषता अर्थात् न्यूनाधिकरण होती हैं।

.....

.....

7.कर्म के कारणभूत सूक्ष्म, एक क्षेत्र को अवगाहना करके रहे हुए तथा अनंतानन्त प्रदेश वाले पुद्गल योगविशेष से सभी ओर से सभी आत्मप्रदेशों में बंध को प्राप्त होते हैं।

.....

.....

8. स्तव-स्तुति-मंगल से जीव को ज्ञान-दर्शन चारित्र-स्वरूप बोधिलाभ प्राप्त होता हैं। ज्ञान-चारित्ररूप बोधि के लाभ से संपन्न जीव, अन्तक्रिया के योग्य अथवा (कल्प) वैमानिक देवों में उत्पन्न होने के योग्य आराधना करता हैं।

.....

.....

9. प्रतिपृच्छना से जीव सूत्र, अर्थ ओर तदुभव को विशुद्ध कर लेता हैं तथा कांक्षामोहनीय को विछिन्न कर देता हैं।

.....

.....

10. निन्दना से पश्चात्ताप होता हैं। पश्चात्ताप से विरक्त होता हुआ व्यक्ति करण- गुणश्रेणी को प्राप्त करता हैं। करणगुणश्रेणी प्रतिपन्न अणगार मोहनीय कर्म को क्षय करता हैं।

.....

.....

प्रश्न.3 रिक्त स्थानों की पूर्ति किजिए। **(10)**

1. सामाइएणं ..... जोगविरइं जणयइ।

2. ..... विरज्जमाणे आरंभभपरिच्चायं करेइ।

3. आज्ञाऽपायविपाकसंस्थानविचयाय ..... प्रमत्तसंयतस्या।

4. संजमेणं ..... जणयइ।

5. आर्तममनाज्ञानां ..... तद्विप्रयोगायस्मृति समन्वाहारः।

6. सकषायत्वाज्जीवः ..... योग्यान् पुद्गलाना दत्ते।

7. निरालम्बणस्स य ..... जोगा भवन्ति।

8. संवरेणं ..... पुणो पावासवनिरोहं करेइ।

9. ..... प्राणाव्यपरोपणं हिंसा।

10. भूतव्रत्यनुकम्पा दानं सरागसंय मादियोगः ..... शौचामित्ति सद्वेद्यस्य।

प्रश्न.4 नीचे लिखी लाइनों को सही करें। **(7)**

1. सरागसंयमसंयमासंयमा कामनिर्जराबालतपांसि मानुषस्स।

2. मार्गाच्यवन निर्जरार्थ परिषोढव्याः आस्त्रवाः।

3. सज्झाएणं दर्शणावरणिज्जं कम्मं खवेइ।

4. किरियाए भवित्ता तओ, पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ,परिनिव्वाएइ, सव्वदुक्खाणमन्तं करेइं

5. अहिंसादिष्विहामुत्र चापायावद्यदर्शनम्।

6. योगवक्रता अविसंवादनं चाशुमस्यनाम्नः

7. सोहीए य णं विसुद्धाणं तच्चं पुणो भवग्गहणं इक्कमइ।

प्रश्न. 5 निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(17)**

1. दर्शन विशोधि के द्वारा विशुद्ध जीव उत्कृष्ट कितने भव में मोक्ष जाता हैं ?

.....

2. सम्यक्त्व पराक्रम के 73 बोलों में 45वाँ बोल कौनसा हैं ?

.....

3. महानाग जिस प्रकार केंचुली का त्याग करता हैं उसी प्रकार मृगापुत्र ने किसका त्याग किया ?

.....

4. मृगापुत्र का नाम क्या था ?

.....

5. नाम कर्म की जघन्य स्थिति क्या हैं ?

.....

6. छद्मस्थ वीतराग मे कितने परिषह हो सकते हैं ?

.....

7. साधु जीवन की तुलना किससे की गयी हैं ?

.....

8. माता-पिता ने अनुमति देते हुए श्रमण जीवन के किस दुःख को मृगापुत्र कहा ?

.....

9. निश्चल और निःशक होकर श्रमण धर्म का आचरण करना किसकी तरह दुष्कर हैं ?

.....

10. निर्देद से जीव क्या प्राप्त करता हैं ?

.....

11. किससे जीव का प्रहलाद भाव की प्राप्ति होती हैं ?

.....

12. योग निरोध अवस्था में जीव कौन-सा ध्यान ध्याता हैं ?

.....

13. परभव में जाने वाला जीव किस प्रकार वेदना रहित और सुखी होता हैं ?

.....

14. बलभद्र राजा किस नगर के राजा थे ?

.....

15. भोग किसके समान कटू और दु:खदायी हैं ?

.....

16. श्रमण को देखने से मृगापुत्र को कौन-सा ज्ञान उत्पन्न हुआ ?

.....

17. ऐर्यापथिक कर्म की कितनी स्थिति हैं ?

.....